

चंद्रकांता की कहानियाँ : लोकल से ग्लोबल तक बीरेंद्र किस्कू

Link : https://santiniketansahityapath.org.in/wp-content/uploads/2025/02/24_Birendra-Kisku.pdf

शोध सार: कहानी आधुनिक हिन्दी गद्य की सर्वाधिक लोकप्रिय व सशक्त विधा है। अपनी रोचकता, मार्मिकता घटना व संवेदना की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति के कारण यह विधा पाठकों को न केवल आकर्षित करती है। अपितु उनके मन मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ती है। कहानीकार चन्द्रकान्ता का विचार है- कहानी अनुभव, विचार, संवेदना तीनों पक्षों को साथ लेकर भाषायी कौशल से पाठक तक संप्रेषित होती है।” कहानी की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। चन्द्रकांता उन लेखिकाओं में से एक हैं जिन्होंने कभी भी दर्रे वाली कहानियों नहीं लिखीं। उनकी लिखी हुई हर कहानी स्त्री कथाकारों की एक खास तरह की चौहद्दी को लांघकर आती है और सीधे-सीधे बुरे वक्त में जूझते हुए मनुष्य की आकुल पुकार से जुड़ने की कोशिश करती है। महानगरीय जीवन में अजनबीपन, अविश्वास, टूटते दांपत्य संबंध, भूख की समस्या, दिखावटीपन की समस्या का चित्रण हुआ है। नेता लोग सामान्य व्यक्ति को किस प्रकार गुमराह करते हैं। बेरोजगारी के कारण युवक को दर-दर की ठोकरे खाते हुए पागल की तरह रास्ते पर घूमना पड़ रहा है। आज भी जनता का शोषण हो रहा है इसका यथार्थ चित्रण कहानियों में किया है। वेश्या का शोषण, मजदूरों का शोषण, भ्रष्टाचार आदि के आर्थिक चित्र कहानियों में शब्द-बद्ध हुए हैं। लेकिन सिर्फ स्त्रियों ही नहीं हैं, ये मनुष्य मात्र की करुण त्रासदी को अपना सरोकार मानकर चलती हैं और स्त्री के दुःखों को एक बड़े कैनवस पर रखकर देखती हैं। चन्द्रकान्ता एक प्रतिभा संपन्न रचनाकार रही हैं। उनका साहित्य जीवन के विविध पहलुओं एवं भंगिमाओं को सहजता से वह मर्म को छू लेता है। सामाजिक प्रतिबद्धता के नाम पर नीरस और उपदेशात्मक रचनाएँ उन्होंने नहीं दी। बल्कि कला की सामाजिक प्रतिबद्धता को यथोचित मान देनेवाले कथाकारों में चन्द्रकान्ता का नाम अग्र गण्य है।

बीज शब्द: भारतीय संस्कृति, परंपराएँ, राजनीतिक विडंबनाएँ, विस्थापन की समस्या, शरणार्थी संकट, युवा पीढ़ी की समस्या, आतंकवाद, साहित्य जीवन, अव्यवस्था, आस्था व विश्वास।

मूल आलेख: चन्द्रकांता जी ने अपनी कहानियों में भारतीय संस्कृति के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं की चर्चा की है, लेकिन जब हम इनकी कहानियों में संस्कृति का अध्ययन करते हैं, तो एक खास बात सामने आती है। लेखिका ने उन पहलुओं की अभिव्यक्ति कम की है जिनसे हर भारतीय परिचित है, जैसे भारत की संस्कृति के विभिन्न पहलू जैसे रहन-सहन, वेशभूषा, रीति-रिवाज, परंपराएँ और मान्यताएँ। इसके बजाय, उन्होंने उन पहलुओं को उजागर किया है जो वर्तमान भारतीय संस्कृति और समाज में व्याप्त हैं, जिन्हें आज हर भारतीय अनुभव कर रहा है। उदाहरण के लिए, व्यक्ति उपभोक्तावादी संस्कृति के रूप में इसे देख रहा है। “कथावस्तु के अनुसार पात्रों और उनके चरित्रों का निर्माण, पात्रों और प्रसंग के अनुसार संवाद की योजना, और यथानुरूप वातावरण का निर्माण आदि दृष्टियों से चंद्रकांताजी की रचनाओं का शिल्प विधान प्रभावी साबित हुआ है।”¹

“आधुनिक युग में शिक्षा तथा विज्ञान का प्रसार, औद्योगीकरण, वैयक्तिकता का विकास, नए दृष्टिकोण तथा आर्थिक स्थिति में आए परिवर्तन आदि के कारण परिवार का विघटन तेजी से हो रहा है। पति-पत्नी में सच्चे प्रेम का अभाव होने के कारण तथा तीसरे व्यक्ति का आगमन होने के कारण दांपत्य जीवन सफल नहीं होता है। विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित मध्यवर्गीय समाज रूढ़ि-परंपराओं तथा रीति-रिवाजों से इतना चिपक गया है कि वह उन्हें छोड़ नहीं सकता। इसमें अलग-अलग प्रसंगों पर अलग-अलग रूढ़ि-परंपरा और रीतियाँ प्रचलित हैं। मध्यवर्गीय समाज में आय के स्रोत अत्यंत सीमित हैं। नौकरी ही उस समाज की आय का प्रमुख साधन है। अर्थ के अभाव के कारण मध्यवर्गीय को जीवन जीना दुश्चर हो गया है। आज अर्थ को ही महत्त्व प्राप्त हो गया है। अर्थ-प्राप्ति के लिए मानव चोरी, लाचारी, भ्रष्टाचार आदि का सहारा लेता है।”²

“प्रेम यह परिकल्पना व्यापक है। एक दूसरे के प्रति प्रेम का आकर्षण, जात-पात, उच्च- नीच समान का विरोध सभी लाँधकर विवाह के पवित्र बंधन में बाँध देता है। विवाह पूर्व प्रेम में जिम्मेदारी का अभाव और उन्मुक्तता अधिक दिखाई देती है। उन्मुक्त प्रेम करनेवाले प्रेमी केवल सौंदर्य तथा यौवन से प्रेम करते हैं। उनमें हार्दिक प्रेम नहीं होता। ऐसा प्रेम पारिवारिक स्वास्थ्य के लिए घातक होता है। धर्म जाति-पाति तथा धन का अभिमान आदि का संबंध में भारतीय समाज में अभिरूढ़िवादिता बहुत बड़े पैमाने पर है। ऐसी अवस्था धर्म, जाति-पाति का विचार न करनेवाले युवक-युवतियों के जीवन में समस्याएँ पैदा करता है।”³ चंद्रकांता की कहानियों में निम्न मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण उनकी अभिव्यक्ति का केंद्र बिंदु रहा है।

“‘दहलीज पर न्याय’ कहानी की नायिका रूक्मी को भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। रूक्मी को जब बच्चा होता है तब से उसे समस्याएँ घेर लेती हैं। गाँव का महंत उसके बेटे की बली देना चाहता है। इसीलिए वह भागकर पुलिस थाना जाती है। लेकिन जो आदमी की रक्षा करनेवाले पुलिस ही भक्षक बन जाते हैं। रूक्मी पर पुलिसवाले ही अत्याचार करते हैं। वहाँ से भागकर रूक्मी दूसरे गाँव जाती है। चंद्रकांताजी के कथा साहित्य में प्रतिबिंबित समस्याओं के अध्ययन-विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उनकी कहानियों में कथा के साथ समसामयिक मानव जीवन के सम्मुख की विभिन्न छोटी-बड़ी समस्याओं का संदर्भोचित समावेश स्वाभाविक एवं प्रभावी ढंग से हुआ है। उनमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक समस्याएँ एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्तिपूर्ण मानव जीवन के लिए चुनौती बने आतंकवाद की समस्या प्रमुख रूप से उभर कर सामने आयी हैं।”⁴

“प्रेम आकर्षण, जात-पात, उच्च- नीच समान का विरोध सभी लाँधकर विवाह के पवित्र बंधन में बाँध देता है। विवाह पूर्व प्रेम में जिम्मेदारी का अभाव और उन्मुक्तता अधिक दिखाई देती है। उन्मुक्त प्रेम करनेवाले प्रेमी केवल सौंदर्य तथा यौवन से प्रेम करते हैं। उनमें हार्दिक प्रेम नहीं होता। ऐसा प्रेम पारिवारिक स्वास्थ्य के लिए घातक होता है। धर्म जाति-पाति तथा धन का अभिमान आदि का संबंध में भारतीय समाज में अभिरूढ़िवादिता बहुत बड़े पैमाने पर है। ऐसी अवस्था धर्म, जाति-पाति का विचार न करनेवाले युवक-युवतियों के जीवन में समस्याएँ पैदा करता है। अनेक कहानियों का अधिकांश भाग स्मृतियों पर आधारित है। स्वप्न भी एक कहानी का प्रमुख अंग बना है। कहानी संग्रह में कहानियों के क्रम निर्धारण एवं पात्रों के नामकरण में किंचित अनवधानता दिखाई पड़ती है, क्योंकि विषयगत दृष्टि से कहानियों की विशेषताओं को और अधिक आसानी से अनुभव करें। चंद्रकांता के ये कहानी संग्रह अपनी कथ्यगत एवं शिल्पगत मौलिकताओं के कारण हिंदी कहानी साहित्य में एक पृथक स्थान बनाने में निश्चय ही सफल हुए हैं।”⁵

“ ‘मुक्ति-प्रसंग’ कहानी में गरीब भिखमंगे लोगों का चित्रण किया है। बेटे पिताजी का श्राद्ध करने गंगा घाट पर आते हैं। पिताजी की आत्मा को शांति मिले इस उद्देश्य से श्राद्ध करते हैं। दो-सौ जनों के लिए हलवा-पुड़ी, सब्जी का प्रबंध करते हैं। कुछ तो मिलेगा, इस आशा से गरीब लोग और भीखमंगे वहाँ आते हैं। पुड़ी सब्जी पर गिद्धों की तरह टूट पड़ते हैं। शोर ज्यादा होने पर मुख्य पण्डों से उन्हें धमकाया जाता है। कथ्य या अभिव्यक्त संवेदना की गुंजित ध्वनि छाया शीर्षक में देखी जा सकती है। चन्द्रकान्ता समकालीन हिन्दी कहानीकारों में बहुचर्चित हैं। कहानीकार के रूप में चन्द्रकान्ता ने अक्षय कीर्ति अर्जित की है। स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद कश्मीर और नई स्थितियों और बदलते जीवन मूल्यों के प्रभाव का अनुभव किया, उन्हें कहानीकार चन्द्रकान्ता ने सहानुभूति और साहस के साथ अभिव्यक्ति दी है। चन्द्रकान्ता कश्मीर में जन्मी, पली, बड़ी हैं। कश्मीर की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थितियों और समस्याओं से वे अच्छी तरह परिचित हैं।⁶ परिवार जैसी प्राथमिक एवं सर्वव्यापी सामाजिक संस्था का उद्भव निश्चय ही मनुष्य की सहज जैविक आवश्यकताओं और आधारभूत सामाजिक वृत्तियों से हुआ है। परिवार इसी लिए भी महत्वपूर्ण है कि एक ओर जहाँ उसमें थकी हुई पीढ़ी आश्रय पाती है, वहीं वह भावी पीढ़ी का निर्माण भी है। परिवार में ही भूत, भविष्य, वर्तमान और भविष्य का साकार रूप निश्चित होता है। “आधुनिक काल में परिवार एवं दांपत्य संबंध में अधिकाधिक टकराव निर्माण हो रहा है। परिवार में रहनेवाले हर एक सदस्य के प्रति दूसरे सदस्य के मन में अनास्था निर्माण होती दिखाई देती है। परिणाम स्वरूप परिवार विभक्त हो रहे हैं।

खून के रेशे इस कहानी में वृद्ध व्यक्ति की करुणा को अभिव्यक्त किया है। बड़े पापा की पत्नी का देहांत होता है। इसीलिए मित्र उन्हें दूसरी शादी करने का आग्रह करते हैं मात्र वह एकनिष्ठ पति है। वह पत्नी के वादों को स्मरण कर उसकी यादों में ही बाकी की जिन्दगी बच्चों के साथ गुजार देते हैं। इस बदलते समाज में नारी का स्थान महत्वपूर्ण है। “पुरातन काल से नारी समस्या का प्रमुख कारण प्रायः आर्थिक पराधीनता था। “वर्तमान काल में नारी शिक्षा का प्रचार होने के कारण आज नारी भी पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर नौकरी करती है। उसकी आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आ रहा है। फिर भी पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था के कारण नारी समस्या जटिल बनती गई। आधुनिक युवा लेखिकाओं/साहित्यकारों ने आज की नारी की सामाजिक स्थिति और मानसिकता को बड़ी गहराई से चित्रित किया है। धर्म के आडंबर प्रिय रूप और ईश्वर के नाम पर की जाने वाली छल-कपट को लेखिका ने बेनकाब किया है।⁷ ‘इन्तजार बरकरार’ कहानी मृत्यु शैया पर पड़े उन बीमार मरीजों की मानसिकता को उजागर करने वाली कहानी है जो कैंसर एवं हृदय रोग जैसी असाध्य बीमारियों से ग्रस्त हैं। फिर भी मृत्यु के सच को जानने के बावजूद उसे झुठलाने तथा नकारने के एकाकी ऊहापोहों में जीते रहते हैं। सब कहानियों से अलग यह कहानी में शैली में लिखी गयी है।

“व्रत-उपवास में आस्था रखनेवाले लोगों की मान्मृताओं की इन्होंने समीक्षा की है। हिन्दू-मुस्लिम धर्मावलंबियों में परस्पर प्रेम — भाव का लेखिका ने समर्थन किया है। कर्मकांडों के विकृत रूप में विश्वास रखने के कारण आम लोगों के जीवन में उत्पन्न समस्याओं का चन्द्रकान्ता ने यथार्थ अंकन किया है। फलस्वरूप वे एक सफल साहित्यिक साधिका बन गयी। एक आदर्श भारतीय नारी की तरह अपनी पारिवारिक दायित्व बखूबी निभाते हुए सृजनरत लेखिका का अपना परिवार और समाज के प्रति दायित्वबोध सराहनीय है। अत्यन्त श्रेष्ठ, आकर्षक, एवं प्रभावोत्पादक व्यक्तित्व की स्वामिनी चंद्रकांताजी सामाजिक एवं साहित्यिक संसार की नयी एवं आगामी पीढ़ी के लिए प्रेरणा एवं आदर्श है। बारह साल की कच्ची उम्र में कविता लिखकर साहित्य सृजन में पदार्पण करने वाली चंद्रकांताजी के नियमित लेखन का प्रारंभ सन् 1967 में प्रकाशित ‘खून के रेशे’ कहानी से ही हुआ है। अब तक लगभग दो सौ कहानियाँ लिखकर चंद्रकांताजी ने हिन्दी कहानी साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अब तक उनके 14

कहानी संग्रह और 7 कथा संकलन प्रकाशित हो चुके हैं।”⁸

सामाजिक समस्या के अंतर्गत समाज में जो दिखाई देता है उसका वर्णन आता है। इसमें बहुत-सी समस्याएँ होती हैं, जिसको हल करने के लिए बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मानव में जो जाति, वंश और धर्म के आधार पर संघर्ष निर्माण होते हैं, उनका भी स्पष्टीकरण इन समस्याओं में किया जाता है। मानव समाज के सहारे ही जीता है और उसका अंत भी उसी में होता है। “औद्योगीकरण तथा पाश्चात्य मूल्यों के प्रभाव के परिणाम स्वरूप आचार-विचार में आए हुए परिवर्तन पारिवारिक स्थिति को अस्थिर बनाते हैं और उससे सामाजिक समस्याएँ निर्माण होती हैं “मध्यवर्गीय समाज जीवन दिन-ब-दिन जटिल होता जा रहा है। “मध्यवर्गीय समाज आर्थिक, सामाजिक, वैचारिक तथा व्यावहारिक दृष्टि से आपस में समानता रखता है। चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित कुछ मध्यवर्गीय समाज के पात्रों या परिवारों की आय का स्पष्ट रूप से संकेत मिलता है, तो कुछ का नहीं मिलता। उनकी सभी कहानियों में मध्यवर्गीय समाज और निम्न मध्यवर्गीय समाज का चित्रण हुआ है। विवेच्य कहानियों में मध्यवर्गीय समाज जीवन में आज भी विवाह विषयक कई रीतियों प्रचलित हैं उनका चित्रण मिलता है।”⁹

“आतंकवाद का साया धीरे-धीरे सारी दुनियां को अपने आगोश में लपेटता जा रहा है। किन्तु जाणा पुत्र रहमते बारांन’ तथा ‘वितस्ता का जहर में क्रमशः पंजाब और कश्मीर में फैले आतंकवाद का वर्णन किया है। तीनों में यही दिखाया गया है कि इन तीनों प्रान्तों के विभिन्न धार्मिक आस्था वाले लोग जो परम्परागत निवासी हैं इनमें परस्पर कोई बैर भाव नहीं है। इनके दीन धर्म तो अपना-अपना लेकिन प्यार मुहब्बत साझा है। वे एक-दूसरे के रक्षक हैं, लेकिन चंद मुट्ठी भर बददिमाग लोगों ने इनमें भेद और आतंक फैला रखा है। आजादी के बाद शिक्षा की लहर तेजी से बढ़ने के कारण अनेक शिक्षित युवक-युवतियाँ प्रेम विवाह करने लगे हैं। कुछ प्रेम-विवाह असफल भी सिद्ध होते हैं। इस समाज में संयुक्त परिवार की परंपरा कम होती जा रही है। चंद्रकांता ने पूरे कहानी संग्रह में अनिवासी भारतीयों एवं उनके माता-पिता की समस्या, अपने मूल निवास से दूर कहीं शहरों में बसे गए बेटों और उनके वृद्ध माता-पिता की समस्या, तेजी से होते सांस्कृतिक संक्रमण की समस्या और आतंकवाद की समस्या को चंद्रकांता ने बहुविध रूपों में कई कहानियों में प्रमुखता से स्वर दिया है।”¹⁰

इसके अलावा भी जीवन के अहम् प्रश्नों को भी उन्होंने करीब से छूने की कोशिश की है। “चंद्रकांता की कहानियों की भाषा सशक्त है। परिवेश की माँग के अनुरूप उन्होंने पंजाबी एवं कश्मीरी मिश्रित देशी एवं विदेशी शब्दालियों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। किंतु कहीं-कहीं ऐसे स्थल आम पाठकों के लिए दुरुह भी हो गए हैं। उनकी कहानियों में स्थान-स्थान पर नए एवं मौलिक उपमान देखे जा सकते हैं, जिनमें से कुछ औसत और कुछ अत्यंत चित्ताकर्षक भी हैं। कुछ स्थलों पर तो अच्छे उपमानों की श्रृंखला-सी रच दी गई है। कहीं-कहीं भावाभिव्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए प्रतीकों का सहारा लिया गया है। व्यंग्य के पुट का कम-से-कम प्रयोग दृष्टिगत होता है। युगीन राजनीतिक विडंबनाओं और आतंकवादियों के अत्याचारों के नेपथ्य में उपजी समस्याओं का चन्द्रकान्ता ने बेहद ईमानदारी के साथ अपने उपन्यासों में वर्णन किया है। इन्होंने अहिंसा, प्रेम और मानवता का समर्थन किया है। लेखिका ने कि विधि-युक्त जीवन-आचरण में आस्था जगाने में धर्म की विशिष्ट भूमिका को स्पष्ट किया है। भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल पक्षों पर उपन्यासकार चन्द्रकान्ता ने प्रकाश डाला है।”¹¹

“नारी समाज का महत्वपूर्ण अंग है। किसी भी समाज की श्रेष्ठता का निर्णय मुख्यतः समाज में नारी की स्थिति पर निर्भर रहता है। प्राचीन धर्मशास्त्र ने उस पर अनेक निबंध लगाए थे। नारी का जीवन एक अभिशाप माना जाता है। समाज तथा

परिवार में नारी को पुरुषों की तुलना में हेय समझा गया। लड़के की पैदाइश पर जहाँ प्रसन्नता प्रकट की जाती थी, वहाँ लड़की पैदा होने पर हंगामा मच जाता था। परिवार में लड़के की तुलना में लड़की को कम प्यार मिलता है। अतः बचपन से ही उसमें हीन ग्रंथी उत्पन्न होती हैं और वह जीवन भर अत्याचारों की चुपचाप सहती है। भारतीय समाज में शताब्दियों से उपेक्षित नारी पुरुष के अत्याचार से पीड़ित रही। उसके स्वतंत्र अस्तित्व की किसी को कल्पना तक नहीं।¹ निर्जीव पदार्थों के समान उसका क्रय-विक्रय हो रहा। वह असमर्थ है, इसलिए वह अत्याचार स² हती रही। समाज में उसका स्थान 'भोग्यामात्र' रहा। धीरे-धीरे परिस्थिति अनुकूल पाकर नारी अपनी अलग पहचान बनाती गई। आज समाज में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है। हमारे समाज के सार्वजनिक अस्पतालों की दयनीय दशा को उजागर करने वाली इस कहानी का केंद्रपात्र एक रुग्ण महिला है, जिसे लेखिका ने कोई नाम न देकर महिला संज्ञा देकर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। महिला, स्वार्थी डॉक्टरों के उपेक्षा भाव और शोषण के कारण दर्द सहते-सहते जान छोड़ने के लिए विवश हमारे समाज के अनगिनत मरीजों के प्रतिनिधि पात्र है।

“चन्द्रकांता जी ने भारतीय संस्कृति के धार्मिक पहलुओं की अभिव्यक्ति करते हुए धर्म व नैतिकता, आस्था व विश्वास, धार्मिक सहिष्णुता व अहिष्णुता, मठों, मंदिरों व पीठों में व्याप्त अनाचार, अंध विश्वास से पीड़ित जनता का भी यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। भारतीय संस्कृति का चंद्रकांता जी की कहानियों में अध्ययन करते हुए जो सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण, जटिल, समसामयिक व ज्वलन मुद्दे की अभिव्यक्ति हुई है वह है भारतीय समाज व संस्कृति पर पड़ने वाले राजनीतिक पहलुओं की अभिव्यक्ति। जिसमें आतंक, हत्या व दरिदंगी के साथ कश्मीरी समस्या का यथार्थ चित्रण किया गया है।”¹³ चन्द्रकांता जी की ये कहानियाँ सामाजिक, आर्थिक स्तर पर बदलते आधुनिक संदर्भों में सम्बन्धों के पुनर्मूल्यांकन को पुनः विश्लेषित करने की बात पर जोर देती है इनकी कहानियों में आर्थिक विवशताओं से निरन्तर कुंठित होते आदमी की छटपटाहट है तो कहीं जीवन में आस्था का प्रकाशन भी है। उनकी कहानियों में किसी वादों का घेरा नहीं है सुख दुख की समस्याएँ जुड़ी हुई है। आम आदमी की चिन्ता है या व्यक्ति के यथार्थ जीवन की अभिव्यक्ति है। चंद्रकांता ने अपने कहानी संग्रह में अनिवासी भारतीयों और उनके माता-पिता की समस्याओं, अपने मूल निवास से दूर बसे बेटों और उनके वृद्ध माता-पिता की समस्याओं, तेजी से हो रहे सांस्कृतिक संक्रमण और आतंकवाद की समस्याओं को कई कहानियों में प्रमुखता से उठाया है। इसके अलावा, उन्होंने जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्नों को भी गहराई से छूने की कोशिश की है।

“अनेक कहानियों का अधिकांश भाग स्मृतियों पर आधारित है। स्वप्न भी एक कहानी का प्रमुख अंग बना है। कहानी संग्रह में कहानियों के क्रम निर्धारण एवं पात्रों के नामकरण में किंचित अनवधानता दिखाई पड़ती है, क्योंकि विषयगत दृष्टि से कहानियों की विशेषताओं को और अधिक आसानी से अनुभव करें। चंद्रकांता के ये कहानी संग्रह अपनी कथ्यगत एवं शिल्पगत मौलिकताओं के कारण हिंदी कहानी साहित्य में एक पृथक स्थान बनाने में निश्चय ही सफल हुए हैं।”¹⁴ चंद्रकांता ने स्थानीय भारतीय समस्याओं के साथ वैश्विक समस्या पर भी लिखा है। आतंकवाद, शरणार्थी संकट, विस्थापन और बेरोजगारी की समस्या वैश्विक है। साम्प्रदायिक विडम्बनाओं को उजागर करती चन्द्रकांता की चर्चित कहानी ‘वितस्ता का जहर’ में आतंकवाद से प्रभावित कश्मीर में बसे हिन्दुओं की पौड़ा का गहन वर्णन किया गया है। दादी आतंकवाद के शब्द से अनजान हैं, लेकिन खून से लथपथ लाशें देखकर उन्हें ऐसा लगता है जैसे कोई भयानक दैत्य वादी में घुस आया हो। पाकिस्तान में फुसलाए गए गुमराह लोग हैं। पास-पड़ोस में भी लोग हैं, लेकिन मुसलमान होने के बावजूद वे दुश्मन नहीं हैं। फुसलाए गए लोग घरों में चिट्ठियाँ फेंककर धमकाते हैं कि घर बार छोड़कर चले जाओ, नहीं तो भून दिए जाओगे। आतंकवादियों का कोई धर्म या ईमान नहीं होता। वे घरों में घुसकर औरतों को जुलूस में शामिल होने के लिए धमकाते हैं।

“समाज के विस्तृत फलक के अन्तर्गत पारिवारिक जीवन, विवाह, नारी जीवन, युवावर्गों एवं बच्चों से संबन्धित समस्याएँ, समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं भ्रष्ट व्यवस्था जैसी मुख्य समस्याओं के सूक्ष्माति सूक्ष्म अंकन के साथ दूरदर्शन का उल्टा प्रभाव, खेल-कूद के क्षेत्र में व्याप्त पक्षपात, सैनिकों के प्रति उपेक्षा भाव आदि समाज द्वारा अधिक महत्व न देनेवाली समस्याओं को भी लेखिका ने अपनी रचनाओं में बड़ी गंभीरता से प्रस्तुत किया है। सामाजिक, राजनीतिक स्थितियों को चंद्रकांता ने अपनी रचनाओं में यथार्थ रूप में रूपायित किया है।”¹⁵ लेखिका ने अपने कथा साहित्य में जहाँ भारतीय संस्कृति के विविध रंगों की अभिव्यक्ति की है वहीं भारतीय संस्कृति पर पड़ने वाले पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभावों को भी अच्छे से व्यक्त किया है। व्यक्तिवादी सोच, आधुनिकीकरण, मौलिक दृष्टि, मशीनीकरण का भारतीय संस्कृति, पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव, नैतिक मूल्यों के विघटन का भी चित्रण किया है वहीं कश्मीरी संस्कृति, विस्थापन, आतंकवाद के कारण उत्पन्न वहाँ की पीड़ा का मार्मिक चित्रण कर इन गंभीर राजनीतिक विषयों पर भी लेखन कार्य कर इस दृष्टिकोण में बदलाव लाने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष : चन्द्रकांता की कहानियों का सांस्कृतिक अध्ययन व विश्लेषण करने के बाद यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपने जीवन के व्यावहारिक धरातल पर उतरने के पश्चात् ही भारतीय समाज के सांस्कृतिक पक्ष को बहुत ही खूबसूरती से व्यक्त किया है जिसमें उनका साहस, सच्चाई व अभिव्यक्ति की कुशलता भी शामिल है। भारतीय समाज की संस्कृति का ऐसा वास्तविक व यथार्थ चित्रण करना लेखिका की योग्यता व कुशलता का ही परिणाम है। भारतीय समाज की संस्कृति के दोनों पक्षों यथा-सकारात्मक व नकारात्मक को लेखिका ने ईमानदारी से व्यक्त किया है साथ ही इसके विविध आयामों जैसे राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक आदि को भी समाज के सांस्कृतिक पक्ष के रूप में अभिव्यक्ति प्रदान की है। लेखिकाओं का लेखन कार्य केवल स्त्री विषयक लेखन तक ही सीमित है यहीं इनकी कहानियों की महत्वपूर्ण विशेषता भी है।

चंद्रकांता ने जो भी लिखा है वह अनुभूति के ताप में तपकर लिखा है तथा जो भी शिद्धत से महसूस किया है उसे वृहत्तर समाज से जोड़ने की कोशिश की है। वे आम आदमी की पीड़ा को स्वर देते हुए उसकी मुक्ति की कामना करती हैं। तेजी से बदलते घटना-क्रमों तथा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं से उद्धृत जन-साधारण के मानसिक अंतर्ध्वंसों का जिक्र उन्होंने अपनी कहानियों में बड़ी खूबसूरती के साथ किया है। चंद्रकांता की कहानियाँ कथ्यगत विविधता से ओत-प्रोत है। उनमें कहीं टूटते बिखरते संस्कार-जन्य विश्वासों और मानवीयता के बदलने चेहरों का वर्णन है तो कहीं मन में पलते भ्रम और टूटते मानवीय रिश्तों की संवेदना का भी समावेश है। यातना के साथ जीना आज मनुष्य की नियति बन गई है। चंद्रकांता ने पूरे कहानी संग्रह में अनिवासी भारतीयों एवं उनके माता-पिता की समस्या, अपने मूल निवास से दूर कहीं शहरों में बस गए बेटों और उनके वृद्ध माता-पिता की समस्या, तेजी से होते सांस्कृतिक संक्रमण की समस्या और आतंकवाद की समस्या को चंद्रकांता ने बहुविध रूपों में कई कहानियों में प्रमुखता से स्वर दिया है। इसके अलावा भी जीवन के कई अहम् प्रश्नों को भी उन्होंने करीब से छूने की कोशिश की है। उन्होंने अपनी कहानियों के लिए जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से विषय चुने हैं। समकालीन जीवन की विसंगतियाँ, विघटित मूल्यों, बदलते और खोखले होते मानवीय रिश्तों, और आर्थिक एवं सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों को चंद्रकांता ने अपनी रचनाओं में यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है।

उनकी कहानियों की भाषा सशक्त है। परिवेश की माँग के अनुरूप उन्होंने पंजाबी एवं कश्मीरी मिश्रित देशज एवं विदेशी शब्दालियों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। किंतु कहीं-कहीं ऐसे स्थल आम पाठकों के लिए दुरुह भी हो गए हैं। उनकी कहानियों में स्थान पर नए एवं मौलिक उपमान देखे जा सकते हैं, जिनमें से कुछ औसत और कुछ

अत्यंत चित्ताकर्षक भी हैं। कुछ स्थलों पर तो अच्छे उपमानों की श्रृंखला-सी रच दी गई है। चन्द्रकांता जी ने अपनी कहानियों में भारतीय संस्कृति के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं की चर्चा की है, लेकिन जब हम इनकी कहानियों में संस्कृति का अध्ययन करते हैं, तो एक खास बात सामने आती है। लेखिका ने उन पहलुओं की अभिव्यक्ति कम की है जिनसे हर भारतीय परिचित है, जैसे भारत की संस्कृति के विभिन्न पहलू जैसे रहन-सहन, वेशभूषा, रीति-रिवाज, परंपराएँ और मान्यताएँ। इसके बजाय, उन्होंने उन पहलुओं को उजागर किया है जो वर्तमान भारतीय संस्कृति और समाज में व्याप्त हैं, जिन्हें आज हर भारतीय अनुभव कर रहा है। कहीं-कहीं भावाभिव्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए प्रतीकों का भी सहारा लिया गया है। व्यंग्य के पुट का कम-से-कम प्रयोग दृष्टिगत होता है। अनेक कहानियों का अधिकांश भाग स्मृतियों पर आधारित है। स्वप्न भी एक कहानी का प्रमुख अंग बना है। कहानी संग्रह में कहानियों के क्रम निर्धारण एवं पात्रों के नामकरण में किंचित अनवधानता दिखाई पड़ती है, क्योंकि विषयगत दृष्टि से कहानियों की विशेषताओं को और अधिक आसानी से अनुभव करें। चंद्रकांता जी के ये संग्रह अपनी कथ्यगत एवं शिल्पगत मौलिकताओं के कारण हिंदी कहानी साहित्य में एक पृथक् स्थान बनाने में निश्चय ही सफल हुए हैं। चंद्रकांताजी का कथा संसार बहुत विस्तृत और व्यापक है। विषय की विविधताओं की वजह से उन्हें २१ वीं सदी के विविध वर्णी कथाकार कहें तो गलत नहीं। चंद्रकांता २० वीं सदी की विविधवर्णी कथाकार हैं। उनकी कहानियों में विषय की विभिन्नता है। जीवन की अनुभूतियों को लेकर कथाओं कहानियों की रचना की। उनकी कहानियों ने मनुष्य के जीवन जुड़ी विसंगतियां, संकटग्रस्त मानवता, सांस्कृतिक विघटन, आतंकवाद, नारी समस्या इत्यादि का वर्णन किया है।

संदर्भ ग्रंथसूची:

1. (डॉ.) जगदीश चव्हाण, प्र.सं. 2012, चन्द्रकांता का कथा साहित्य, विद्या प्रकाशन, सी-449, गुजैनी, कानपुर 208022
2. डॉ. मधुरेश, सं. 1996, हिन्दी कहानी का विकास, नई कहानी, 170 आलोपीबाग, इलाहाबाद 211003
3. चंद्रकांता अंतिम साक्ष्य एवं अर्थतर, प्र.सं. 2007, समय प्रकाशन, आई 1/16, शांति मोहन हाऊस, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002।
4. चंद्रकांता, प्र.सं. 2015, प्रश्नों के दायरे में, अमन प्रकाशन /104ए/80सी, रामबाग, कानपुर 208012, उत्तर प्रदेश
5. (डॉ.) ऊर्मिला गुप्ता, सं. 1966, हिन्दी कथा-साहित्य के विकास में महिलाओं का योग, राधाकृष्णा प्रकाशन, 414, रूप नगर, दिल्ली - 7
6. चंद्रकांता, काली बर्फ, प्र. सं. 1996, किताब घर, 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002
7. (डॉ.) डी. राव, श्यामला नरसिंग, प्र.सं. 2004, कथाकार, आरिगपूडि व्यक्तित्व एवं कृतित्व, विकास प्रकाशन, कानपुर- 208027
8. चंद्रकांता, कथा सतीसर, प्र.सं. 2001, राजकमल प्रकाशन प्र.लि, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, 110002
9. चंद्रकांता बाकी सब खैरियत है, प्र.सं. 1983, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002
10. चंद्रकांता अंतिम साक्ष्य एवं अर्थतर, प्र.सं. 2007, समय प्रकाशन, आई 1/16, शांति मोहन हाऊस, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002
11. डार मुश्ताक अहमद, प्र.सं. 2004, चंद्रकांता के कथा-साहित्य का मूल्यांकन मोहित पब्लिकेशन्स, 4675/21, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002
12. चंद्रकांता, प्र.सं. 2009, हाशिए की इबारतें, राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002
13. (डॉ.) सुरेश कुमार जैन, प्र.सं. 2008, हिन्दी साहित्य का इतिहास: नए विचार नई दृष्टि, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली

14. नरेश भारती, सं. 2007, आतंकवाद, साहित्य प्रकाशन, 101 फर्स्ट फ्लोर प्रताप नगर, मयूर विहार, दिल्ली 110091
15. (डॉ.) उषा यादव, प्र.सं. 1999, हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2/38, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002

लेखक परिचय: बीरेंद्र किस्कू, हिंदी विभाग में पीएचडी विद्वान, विश्वभारती, शांतिनिकेतन।